International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

हरियाणा में हड़प्पा कालीन संस्कृति का इतिहास : एक मूल्यांकन

मनुदेव

M. Phil & NET, इतिहास विभाग

म0द0वि0, रोहतक (हरि0)

शोध–आलेख सारः

हड़प्पा कालीन संस्कृति के विकास को जानने के लिए हरियाणा का एक अद्वितीय स्थान रहा है। वर्तमान समय में प्रदेश की 'सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में विकसित हरियाणा, विभिन्न समय में बसे नगरों, गावों में बसे लोगों द्वारा निर्मित बर्तन, घर, गलियों, वास्तुकलाओं, मुद्राएं, अस्त्र व शस्त्र इत्यादि सांस्कृतिक धरोहर के रूप में आज भी विद्यमान है। प्रस्तुत पत्र हड़प्पा कालीन सांस्कृतिक धरोहर को संस्कृति के विभिन्न कारकों को मानकर, हरियाणा प्रदेश के सन्दर्भ में एक विश्लेषणात्मक मूल्यांकन किया गया है।

कुंजी शब्द : हड़प्पा कालीन संस्कृति, नगर व गांव, सांस्कृति कारक, विश्लेषणात्मक मूल्यांकन।

परिचयः

किसी प्रदेश की सांस्कृतिक सम्पन्नता को मापने के लिये उस प्रदेश की 'सांस्कृतिक धरोहर का मूल्यांकन करना अति आवश्यक है। प्रस्तुत पत्र में हरियाणा की हड़प्पा कालीन सांस्कृतिक धरोहर का मूल्यांकन, हरियाणा में पाऐं गए ऐतिहासिक धरोहर के रूप में पता चलता है।'

इस विषय को लेकर सन् 1920 में भारतीय पुरातत्व विभाग के दो विद्वानों, माधोस्वरूप वत्स और दयाराम साहनी ने उत्कृष्ट कार्य किया है। उस खुदाई में हड़प्पा संस्कृति के बहुत से अवशेष समय–समय पर प्राप्त हुए है। प्रथम दो वर्ष पश्चात ऐसे ही अवशेष तीसरे पुरातत्वविद् डॉ. राखाल दास बनर्जी को हड़प्पा से 640 किलोमीटर की दूरी पर स्थित सिंध के ऐतिहासिक की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम दिशा में चन्हूदड़ो नामक एक नगर की खुदाई से भी इस प्रकार के अवशेष प्राप्त हुए थे। इसके पश्चात और उत्खनन हुए और हड़प्पा संस्कृति के विस्तार, महत्त्व आदि के विषय में हमें व्यापक रूप में "सांस्कृतिक ज्ञान" प्राप्त हुआ है।[2]

हरियाणा में हड़प्पा संस्कृति का विकासः

हरियाणा की "सांस्कृतिक धरोहर" ने हरियाणा की सांस्कृतिक भूमी को एक आधार–भूत प्रदान किया है। यह हड़प्पा कालीन 'सांस्कृतिक धरोहर' ही है, जो हरियाणा को हड़प्पा संस्कृति की भागेदारी की पुष्टि करती है। इस विषय को लेकर कई प्राचीन इतिहासकारों ने विभिन्न क्षेत्रों में जाकर खुदाई करवाकर, 'हड़प्पा सांस्कृतिक धरोहर' के रूप में एक 'साक्ष्य' आधारित इतिहास का सुदृढ़ नींव प्रदान की है। हरियाणा के सन्दर्भ में इन खुदाईयों से यह स्पष्ट हो जाता है कि अब इस संस्कृति से संबद्ध बहुत सारे स्थानों का सर्वेक्षणों द्वारा पता चलता है कि संस्कृति के प्रतिनिधि सिंध तथा पंजाब से उखड़ कर आए और यहां आकर बसे थे। इसमें से कई बस्तियों की विविक्त खुदाई भी हो चुकी है, जिसमें कुछ महत्त्वपूर्ण पुरास्थलों का विवरण, वहां से सांस्कृतिक धरोहर के रूप में उस स्थान के सांस्कृतिक लक्ष्ण (Cultural Traits) के रूप में जाना जाता है, जो उस स्थान की प्रादेशिक पहचान (Regional Identity) बन चुका है।

मितथाल :– मितथाल गांव, जिला भिवानी में स्थित है। इस स्थान पर एक प्राचीन टीले की खुदाई के दौरान हड़प्पा कालीलन संस्कृति से सम्बन्धित, व्यापक रूप में अवशेष मिले है, जो हमे, उस समय की भवन निर्माण पद्धति, मृदभाण्डो के बनाने के तौर तरीके और लोगों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली घरेलू वस्तुएं, आभूषण, बच्चों के खिलौने इत्यादि के विषय की व्यापक रूप में जानकारी मिलती है। भवन निर्माण के सन्दर्भ में, वहां मिले भवनों के अवशेष टीलों के दोनों भागों के प्रारम्भिक स्तरों में बड़ी संख्या में मिले हैं। भवन निर्माण के सन्दर्भ में, वहां मिले भवनों के अवशेष टीलों के दोनों के प्रारम्भिक स्तरों में बड़ी संख्या में मिले हैं। ये सभी सुनियोजित रूप में विकसित हुए प्रतीत होते है। ये भवन कच्ची ईटों द्वारा बने रहने पर भी बहुत सुदृढ़ प्रतीत होते हैं। ये ईटें 10X20X40 से.मी. तथा 9X18X36 से.मी. आकार की है। विभिन्न घरों का आकार विभिन्न होते हुए भी एक पंक्ति में निर्मित हैं। यदि हम मानचित्र का भली–भांति निरिक्षण करें तो पाएंगे कि ये सभी नगर योजनाबद्ध ढंगों से निर्मित हैं। नगर, चौपड़, की विरासत के नमूने (Pattern) पर बसा है। सड़कें 1.50 मीटर से 3.10 मीटर चौड़ी

है। इन सड़कों में मुख्य गलियां मिलती है, जो कि पूर्व–पश्चिम में तथा उत्तर–दक्षिण दिशाओं में जाती है।[4]

मिताथल गांव में कई प्रकार के साक्ष्य मिले है, जो मृदभाण्ड, गुंदी हुई मृदा द्वारा निर्मित है और व्यापक रूप से ताप देकर पकाए गए हैं। जिससे इनकी कोरी पक कर व्यापक रूप से लाल हो गई है। इन पर हल्की लाल स्लिप का प्रयोग भी किया गया है, और किनारे तथा कंधे पर साधारणतः काले रंग की पट्टी पुती है। कुछ मृदभाण्ड स्लिप तथा पट्टी के बिना भी हैं। ये मृदभाण्ड चौड़ तथा संकरे वाले संग्राहक मृदभाण्ड, ग्लोब आकार के मटके, कुंडियां, प्लेट, बीकर, छिद्रदार जार, पत्थर के बांट इत्यादि भी मिले हैं।

अन्य दुर्लभ पत्थरों, फियास, स्टेटाइठ तथा मिट्टी के बने मनके हैं। यहां से एक अंगूठी भी मिली हैं। इनके अतिरिक्त मिट्टी फियांस और तांबे निर्मिट चूड़ियां, तांबे का हार्जून (भाला) और हांथी–दांत निर्मित पिन भी मिली है।

बनावली :– बनावली गाँव, फतेहाबाद से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इस स्थान का उत्खनन, सन् 1974 में हुआ था, जिसमें हड़प्पा कालीन व्यापक रूप से अवशेष प्राप्त हुए थे। क्षेत्रीय अध्ययन के अनुसार, नगर का विकास, नगर नियोजन (Town Planning) के मूलभूत सिद्धांतों के आधार पर हुआ था। खुदाई से प्राप्त अवशेष इस बात को संकेत करते हैं कि नगर भी अन्य नगरों की आकार शतरंज के बिसात की तरह सुनियोजित ढंग से होता था। नगर की विभिन्न दर्जेबन्दी, लोगों के स्तरों के अनुसार होती थी। पूर्व भाग में आम लोग रहते थ। पश्चिमी भाग में अपेक्षाकृत बड़े अधिकारी तथा सम्पन्न लोग निवास करते थे। नगरों में छोटी–बड़ी सड़कें विद्यमान होती थी, जो सक्षम यातायात का सुनिश्चित करती थी। मकानों की बनावट संस्कृति की एक प्रकार की विशेषता है। बनावली में घरेलू वस्तुएं अधिक मात्रा में मिली थी। इनमें चूल्हे, तंदूर, ओवन इत्यादि शामिल है। मिट्टी द्वारा निर्मित कई बर्तन–भांड़े मिले है, जिन पर सुन्दर पुताई तथा चित्रकारी भी की गई है। इसके अतिरिक्त बच्चों के खिलौने, सोने, तांबे आदि के टुकड़े भी मिले हैं, जो इस बात को संकेत करता है कि लोग इन धातुओं के बारे में सूक्ष्म रूप से जानकारी भी रखते थे।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 12
September 2017

हड़प्पन काल में हरियाणा में आज की तरह पशु पालन भी बहुतायत में होता था। क्योंकि इन पशुओं का चित्रांकन उस समय की मुद्रांक पर स्पष्ट रूप से उचेरण किया जाता था।

राखी गढ़ी :—राखी गढ़ी गांव, हिसार जिले के नारनौद कस्बे से लगभग 5 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। गांव के बाहर, एक बड़े क्षेत्र में हड़प्पन संस्कृति के अवशेष 5000 वर्षो से दबे पड़े हैं। राखीगढ़ की खुदाई का श्रेय डॉ. शिन्दे जो कि हड़प्पा संस्कृति के विशेषज्ञ के रूप में माने जाते हैं उन्होने राखी गढ़ की खुदाई के कार्य को एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। क्योकि हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों के पाकिस्तान में होने के कारण से भारत में यह हड़प्पन से जुड़े नगरों में से सबसे बड़ा है। यह नगर भी, हड़प्पा के दूसरे नगरों की तरह दो भागों में बंटा हुआ था। भवन निर्माण की सामग्री में दूसरे हड़प्पा के नगरों की तरह एकरूपता पाई जाती रही है।

फरमाणा:—फरमाणा गांव कस्बा महम से लगभग 13 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। यहां पर 2007—2008 और 2008—2009 वर्षो में खुदाई के दौरान पुरातत्व दृष्टिकोण से बहुत महत्त्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए है, जो हड़प्पा काल की आद्यैतिहासिक (सीसवाल) संस्कृति और हड़प्पा काल की संस्कृति की व्यापक तौर पर विकसित होने का प्रतीक है[5]।

बालू :—बालू गांव कैथल से लगभग 20 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। इस क्षेत्र में उत्खनन के दौरान जो अवशेष यहां मिले हैं, उनमें आवासीय घरों के अवशष अपने आप में कए विशेषता रखते हैं। इन घरों के निर्माण में विभिन्न प्रकार की ईटों के आकारों का मिश्रित प्रयोग किया जाता था। इसी प्रकार मिट्टी द्वारा निर्मित बर्तन, घड़े, तश्तरियां, गोबलेट, बीकर हत्थेदार प्याले इत्यादि अपने आप में एक विशेषता रखते हैं। इन पर काले रंग से चित्रकारी भी की गई है, जो हड़प्पा काल के लोगों की जीवन शैली की उत्कृष्ट रूप में चित्रांकन किया गया है।

हड़प्पा काल की संस्कृति का स्वरूप एवं विशेषताऐं

- हड़प्पा काल की संस्कृति, समस्त भारत में उप—महाद्वीप में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में एक विशेष स्थान रखती है। इतिहासकारों का यह मतह ै कि लगभग 2000 ई.पू. पंजाब व सिंध प्रान्तों से व्यापक रूप से अन्य प्रदेश की और पलायन करके चले गए। हड़प्पन

लोग, जाति से द्रवीड़ थे ऐसा विद्वानों का मत है कि ये लोग सुसंकृत थे तथा इनका मुख्य व्यवसाय खेतीबाड़ी, उद्योग, व्यापार, कारीगरी, पशु–पालन आदि धन्धा करते थे।

- हड़प्पन काल की सभ्यता को "नागर सभ्यता" के नाम से भी जाना जाता है। क्योकि लोगों में "नागर सभ्यता" सम्बन्धी सभी विशेषताएं विद्यमान थी। राखी गढ़ी जैसे क्षेत्र का सूक्ष्म ढंग से निरीक्षण करने पर पता चलता है कि नगर, दूसरे नगरों की तरह 'चौपाड़ की बिसात' के मूलभूत नगर नियोजन के सिद्धान्तों पर बसा था। नगर कई उपखण्डों में बंटे हुए होते थे और पानी के निकास के लिए सुनियोजित ढंग से नाले व नालियां बनी होती थी।
- इस काल में घरों की बनावट, उच्च स्तर की मजबूती तथा सौन्दर्य की दृष्टि से परिपूर्ण होती थी। भवन निर्माण सामग्री उच्च गुणवत्ता से भरपूर प्रयोग की जाती थी। घर प्रायः स्नानगार, पाकशाला, शौचालय इत्यादि को नियमित रूप से बनाया जाता था। भवन निर्माण सामग्री में विशेषकर ईंटें, लगभग सभी शहरों में विभिन्न प्रकार की आवश्यकतानुसार प्रयोग में लाई जाती थी।
- हड़प्पन काल में लोगों का जीवन स्तर उच्च कोटि का होता था। लोग प्रायः कृषि तथा व्यापारिक गतिविधियों में सम्मिलित होते थे। कृषि में जौ की खेती प्रधान कृषि सम्बन्धी गतिविधियों में शामिल होती थी। पशु–पालन को भी अधिक महत्त्व दिया जाता था। इस बात की पुष्टि, उन काल में चली मुद्रा पर अंकित पशुओं के चित्रों से स्पष्ट रूप में होती है।
- शिक्षा के क्षेत्र में लोगों का रूझान स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। क्योकि बनावली, राखी गढ़ी, भिरड़ाना, फरमाड़ा, मिताथल इत्यादि से मिली कई मुद्राऐं इस बात को संकेत करती है कि शिक्षा के प्रति लोगों का रूझान है।

  इस काल में लोगों की धार्मिक मान्याओं में व्यापक रूप से आस्था थी। पीपल, बड़ इत्यादि वृक्ष तथा कई प्रकार के पशु भी पूजनीय थे। इस बात की पुष्टि बनावली से प्राप्त मुद्राओं पर अंकित विचित्र पशुओं के चित्रों द्वारा भी होती है[6]।

हरियाणा में हड़प्पन काल की खुदाईयों से प्राप्त वहां की वास्तुकला, भवन निर्माण, नगर–नियोजन, आहार शैलियों, कृषि व पशुपालन सम्बन्धी गतिविधियों को दृष्टि में रखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि इस हरियाणा की "संस्कृति धरोहर" कितनी उत्कृष्ट रही है।

संदर्भ (Reference)

1. यादव, के.सी.(2012) 'हरियाणा का इतिहास' आदि काल से 1966 तक 'होप इण्डिया पब्लिकेशन' गुड़गांव (हरियाणा)
2. ढांगी, विवके (2005), महम खण्ड, रोहतक का बस्तियों का पैर्टन, अप्रकाशित एम. फिल. की लघु शोधिका, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र।
3. द्वेदी, आई.डी. 'हड़प्पा सभ्यता की निरन्तरता', 'भारतीय पुरातत्व सोसाइटी, नई दिल्ली।
4. रगाचारी के (1927) 'प्राचीन भारत में नगर नियोजन एवं घर निर्माण, ऐतिहासिक त्रिमासिक, लंदन।
5. मुखर्जी, आर.के. (1920) 'प्राचीन भारत में स्थानीय सरकार', ऑक्सफोर्ड प्रैस (द्वितीय एडीशन), लंदन
6. किंग भोजा (1964) 'शहरी वास्तु हलाहबाद' हिस्टोरिकल सोसाइटी, हलाहबाद, Vol. II & III, 1964 ।
7. विष्ठ आर.एस. (2013) 'हड़प्पन सभ्यता' एक दृष्टिकोण पर अगस्त 3, 213 पर भारतीय पुरातत्व सोसाइटी द्वारा कलकता में मेमोरियल, लैक्चर प्रस्तुत किया गया था।

रिपोर्ट :–

1. शिन्दे, वी. ओंसाडास, ए. उसागी एवं कुमार एम.एम. (2008) द्वारा फरमाणा (2007–08) की खुदाई की रिपोर्ट।
2. सूरजभान (1975) सन् 1968 में मिताथल गांव में खुदाई की प्रो. सूरजभान द्वारा दी गई रिपोर्ट।